भजन

तर्ज–माझी मेरी किस्मत के जी चाहे जंहा ले चल

प्रीतम मेरे प्राण के रूह चाहे धाम ले चल

1–जहां के कण कण मे नजारा है, तेरे उस प्यार का
ना जुदाई है जहां, मिलता सुंकु दीदार का
दे दो वो ही प्यार अपना, जो अखंड निज धाम का
लेते थे हम जो हमेशा, इश्क श्यामा श्याम का

2–तुम ही मेरे दिल हो प्रीतम,तुम ही मेरे अरमान हो
चरणो तले दोनों ये तन है,जिसके प्रीतम प्राण हो
मैं तेरी ही रंहू हमेशा,तू मेरे दिल में रहे
ना जुदा हो प्यार की ,ये नाव ऐसे ही बहे

3–हर खुशी से बढ़ के मुझको, तेरी इक मीठी नजर
जिसमे पाऊं इश्क तेरा,रहूं जहां से बेखबर
कह सके ना वो जुंबा से चाहते है रुह से हम
बिन कहे सब जानते हो ,क्या कहें तुमको खसम